This tract was given free to the person who handed it to you. It is free to you too. Never pay for it.
यह पर्चा आपको देने वाले व्यक्ति को मुफ्त मिला था। यह आपके लिए भी मुफ्त है। इसके लिए कभी पैसे न दें।

Read it. Study it with your Bible. Then pass it on to someone else.
इसे पढ़ें। अपनी बाइबल के साथ इसका अध्ययन करें। फिर इसे किसी और को दे दें।

Scan to read more, hear it in your language, or ask a question:
purposeandvision.org
और पढ़ने, अपनी भाषा में सुनने, या सवाल पूछने के लिए स्कैन करें:

We'd love to hear what you think. Scan the code to send us a note.
हमें आपकी राय सुनना अच्छा लगेगा। कोड स्कैन करके हमें संदेश भेजें।

A gift from the churches of Christ.
मसीह की कलीसियाओं की ओर से एक उपहार।

Not for sale.
बिक्री के लिए नहीं।

Hindi

यीशु मसीह कौन हैं?
Who Is Jesus Christ?

भारत में बहुत से लोग यीशु का आदर करते हैं। वे उन्हें एक पवित्र पुरुष, एक बड़ा शिक्षक, एक गुरु कहते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि वे भी एक अवतार हैं, यानी परमेश्वर के बहुत से रूपों में से एक।

लेकिन बाइबल यीशु के बारे में क्या कहती है?

यीशु इतिहास के एक सच्चे मनुष्य हैं। अवतारों की कहानियाँ किसी ऐसी तारीख, राजा या शहर से नहीं जुड़ी हैं जिन्हें कोई ढूँढ सके। लेकिन यीशु की कहानी ऐसी बातों से जुड़ी है। उनका जन्म बैतलहम में हुआ। वे नासरत में बड़े हुए। उन्होंने गलील में उपदेश दिया। जब पुन्तियुस पिलातुस रोमी राज्यपाल था, तब यरूशलेम के बाहर उन्हें मार डाला गया।

The Bible was written so that you would believe Jesus is the sent one, the Son of God, and have life through His name (John 20:31). And He gives eternal salvation to all who obey Him (Hebrews 5:9). He does not simply forget your sin. God forgives you completely when you believe and obey His Son. Read Acts 2:37-38.

Conclusion:

Look again at the dates and the names. Look at the cross. Look at the empty tomb.

Is Jesus only one more avatar to you? Or is He the Christ, the Son of the living God?

Will you believe Him? Will you obey Him?

बाइबल इसलिए लिखी गई कि आप विश्वास करें कि यीशु ही वह मसीह हैं जिन्हें परमेश्वर ने भेजा, परमेश्वर के पुत्र, और उनके नाम से जीवन पाएँ (यूहन्ना 20:31)। जो उनकी आज्ञा मानते हैं, उन सबको वे अनन्त उद्धार देते हैं (इब्रानियों 5:9)। वे आपके पाप को बस भूल नहीं जाते। जब आप परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करते हैं और उनकी आज्ञा मानते हैं, तब परमेश्वर आपको पूरी तरह क्षमा कर देते हैं। प्रेरितों के काम 2:37-38 पढ़ें।

आखिरी बात:

तारीखों और नामों को फिर से देखें। क्रूस को देखें। खाली कब्र को देखें।

क्या यीशु आपके लिए बस एक और अवतार हैं? या वे मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र?

क्या आप उन पर विश्वास करेंगे? क्या आप उनकी आज्ञा मानेंगे?

Many people in India honor Jesus. They call Him a holy man, a great teacher, a guru. Some say He is one more avatar, one more appearance of God among many.

But who does the Bible say He is?

He is a real man in real history. The stories of the avatars are not tied to dates, rulers, and towns that anyone can find. Jesus is. He was born in Bethlehem. He grew up in Nazareth. He taught in Galilee. He was put to death outside Jerusalem when Pontius Pilate was the Roman governor.

लूका ने तो उसी साल के शासकों के नाम भी लिखे हैं (लूका 3:1-2)। पौलुस ने एक राजा को ये बातें बताईं। उसने कहा कि यह बात किसी कोने में छिपकर नहीं हुई। यह सबके सामने हुई (प्रेरितों के काम 26:26)।

यीशु बस एक और अवतार नहीं हैं। अवतार आता है, अपना काम करता है, और फिर युगों के कभी न खत्म होने वाले चक्र में लौट जाता है। यीशु एक ही बार आए। जब ठीक समय पूरा हुआ, तब परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा (गलातियों 4:4)।

यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं। यीशु ने अपने चेलों से पूछा कि वे कौन हैं। तब पतरस ने जवाब दिया:

“आप मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र।” (मत्ती 16:16)

He is the only way to God. You cannot put Jesus on a shelf beside other gods as if they are somehow equal. He will not allow it. He said:

"I am the way, the truth, and the life: no man comes to the Father, but by me." (John 14:6)

Either that is true, or Jesus was a liar. He cannot be merely one more good teacher. No human good teacher says one must come through him to God, unless it is true.

So what will you do with Him? To honor Him as a teacher is not enough.

यीशु ही परमेश्वर तक पहुँचने का एकमात्र रास्ता हैं। आप यीशु को दूसरे देवताओं के साथ एक ही ताक पर नहीं रख सकते, मानो वे सब बराबर हों। यीशु ऐसा होने नहीं देंगे। उन्होंने कहा:

“मार्ग, सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ। मेरे द्वारा आए बिना कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।” (यूहन्ना 14:6)

या तो यह बात सच है, या फिर यीशु झूठे थे। वे बस एक और अच्छे शिक्षक नहीं हो सकते। कोई भी अच्छा मनुष्य शिक्षक यह नहीं कहता कि परमेश्वर के पास पहुँचने के लिए उसी के द्वारा आना होगा, जब तक यह सच न हो।

तो आप यीशु के बारे में क्या करेंगे? उन्हें बस एक शिक्षक मानकर आदर देना काफी नहीं है।

Luke even names the rulers of that very year (Luke 3:1-2). When Paul told these facts to a king, he said this thing was not done hidden in a corner. It happened in the open (Acts 26:26).

He is not one more avatar. An avatar comes, does its work, and goes back into the endless cycle of ages. Jesus came once. When the fulness of the time arrived, God sent His Son (Galatians 4:4).

He is the Son of God. When Jesus asked His disciples who He was, Peter answered:

"You are the Christ, the Son of the living God." (Matthew 16:16)

यीशु हमारे पाप दूर करने आए। हाँ, यीशु ने बीमारों को चंगा किया। उन्होंने दुष्टात्माओं को निकाला। उन्होंने आँधी को शांत किया। लेकिन यह उनका मुख्य काम नहीं था।

उन्होंने बिना पाप के जीवन जिया (इब्रानियों 4:15)। फिर उन्होंने अपना जीवन बलिदान के रूप में दे दिया, ताकि हमें हमारे पाप से छुड़ाएँ (मरकुस 10:45)।

उन्होंने क्रूस पर हमारे पाप अपने ऊपर ले लिए। वे हमारे पापों के लिए मरे, ठीक जैसा पवित्र शास्त्र में पहले से लिखा था। उन्हें गाड़ा गया। और तीसरे दिन वे कब्र में से फिर जी उठे (1 कुरिन्थियों 15:3-4)।

He came to remove our sin. Yes, Jesus healed the sick. He cast out demons. He calmed the storm. But that was not His main work.

He lived without sin (Hebrews 4:15). Then He gave His life as a sacrifice to set us free from our sin (Mark 10:45).

He took our sins on the cross. He died for our sins, just as the Scriptures said He would. He was buried. And on the third day He rose from the grave again (1 Corinthians 15:3-4).